अध्याय 13
कोढ़ की अशुद्धता

प्रसव की घटना से लेकर, जिसने माता को अशुद्ध कर दिया (अध्याय 12), यहोवा का ध्यान एक ऐसी बात की ओर गया जिसने लोगों और वस्तुओं दोनों को अशुद्ध किया था: "कोढ़।" लैव्यव्यवस्था 13 और 14 "कोढ़" के कारण आई अशुद्धता का वर्णन करते हैं। अध्याय 15 अशुद्धता पर यह वर्णन करते हुए चर्चा जारी रखता है, कि शरीर के स्राव से अशुद्ध हुए स्त्री या पुरुष क द्वारा क्या किया जाता था।

लैव्यव्यवस्था 13 लोगों में कोढ़ के संक्रमण के विषय पर बात करता है, और इसके बाद यह वस्त्रों को प्रभावित करने वाले "कोढ़ के एक निशान" के विषय बात करता है। लैव्यव्यवस्था 14 यह प्रकट करता है कि किस प्रकार ऐसा व्यक्ति जो कोढ़ के रोग से चंगा हो चुका था वह किस प्रकार शुद्ध हो सकता था और इस्राएल की मण्डली में किस प्रकार एक बार फिर अपने पुराने जीवन में बहाल हो सकता था। यह अध्याय इस बात पर भी चर्चा करता है कि "यदि कोढ़ का निशान" किसी भवन में पाया जाए तो क्या किया जाता था।

इस अध्यायों के विषय-वस्तु पर विचार करने से पहले, पाठक को यह समझने की आवश्यकता है कि कोढ़ क्या है और यह किस प्रकार परमेश्वर के लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकता है।

पारिभाषिक शब्द "कोढ़"

"कोढ़" क्या है यह अध्याय 13 और 14 का केंद्र है? अंग्रेज़ी शब्द "लेप्रसी (कोढ़)" एक ऐसे रोग का उल्लेख करता है जिसकी व्याख्या निम्नलिखित तरीके से की गई है:

> माइक्रोबैक्टीरियल [सूक्ष्म जीवाणु] संक्रमण का एक विशिष्ट रूप जिसे प्राचीनकाल में भयानक माना जाता था और 1960 ई. तक जिसे प्रचण्ड और असाध्य समझा जाता था। इसके पीड़ित लोगों के मानसिक आघात को कम करने के लिए, जी. ए. हेन्सन जिन्होंने इसके कारक जीव की खोज की। उनके [1871-1873 में] इसकी खोज करने के बाद, इस स्थिति का नाम बदलकर, "हेन्सन डिज़ीज़ [हेन्सन का रोग]" रख दिया गया है।[1]

गॉर्डन जे. वेन्हम ने कहा,

> वास्तविक कोढ़ (हेन्सन डिज़ीज़) एक भयानक रोग है जो त्वचा को प्रभावित करता है और शरीर के अन्य अंगों को पीड़ा के लिए सुन्न और असंवेदनशील बना

देता है, जब हड्डियां विकृत हो रही होती हैं, और अन्त में, पीड़ित मर जाता है। यह अभी भी पूर्व और अफ्रीका के कुछ भागों में व्यापक है। यह संक्रामक भी है, और कुछ समय पहले तक यह असाध्य था।[2]

यह रोग भारत, चीन और मिस्र समेत दुनिया के कई भागों में प्राचीन काल से अस्तित्व में है। इसलिए, यह विश्वासयोग्य है कि इस्राएलियों में उनके फ़िलिस्तीन में इतिहास के आरंभ से ही कोढ़ पाया जा सकता था।[3]

बाइबल में कई स्थानों पर ऐसे लोगों के विषय में वर्णन किया गया है जिन्हें कोढ़ था। मूसा के हाथ में कोढ़ हो गया, और इसके बाद वह फिर से शुद्ध हो गया, ऐसे चिन्हों के रूप में से एक जिनका उपयोग वह यह सिद्ध करने के लिए कर सकता था कि वह परमेश्वर की ओर से बात कर रहा था (निर्गमन 4:6, 7)। मरियम को उस समय कोढ़ हो गया जब उसने मूसा के ऊपर प्रधान बनना चाहा (गिनती 12:10-15)। नामान कोढ़ी, सीरियाई सेना का एक अधिकारी, उन निर्देशों का पालन करके शुद्ध हो गया था जो उसे एलीशा के माध्यम से दिए गए थे (2 राजा. 5:1-14)। गेहज़ी को अनाज्ञाकारिता और एलीशा से झूठ बोलने के कारण कोढ़ हो गया था (2 राजा. 5:27)। सामरिया में चार कोढ़ियों को सीरियाई सेना के भाग विषय में पता लगा और उन्होंने इस समाचार को इस्राएलियों तक पहुँचाया (2 राजा. 7:3-15)। राजा उज्जियाह को तब कोढ़ से दंडित किया गया था जब उसने याजकों के विशेषाधिकारों (2 राजा. 15:5; 2 इतिहास 26:16-21) को हड़पने का प्रयास किया था। एक अवसर पर यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया, जिनमें से एक सामरी था (लूका 17:12-19)।

लैव्यव्यवस्था 13 और 14 में जिस इब्रानी शब्द का "कोढ़" में अनुवाद किया गया वह है צָרַעַת *(त्सारा'अथ)*। सेप्टुजिंट (LXX)[4] में इस शब्द के λέπρα (*लेप्रा*) में अनुवाद करने का अनुसरण करते हुए, अंग्रेज़ी अनुवादों ने इसे पारम्परिक तौर पर "लेप्रसी (कोढ़)" के रूप में अनुवाद किया है।[5] जबकि, लैव्यव्यवस्था 13 और 14 में, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वचन हमेशा उस बात का उल्लेख नहीं करता है जिसे "कोढ़ की व्याधि" या "हैनसेन की व्याधि" के रूप में जाना जाता है। यह विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है क्योंकि यह शब्द कपड़ों और घरों (13:47; 14:34) दोनों पर लागू होता है। इन वस्तुओं को आज "कुष्ठ" के रूप में जाना जाता है, से संक्रमित नहीं किया जा सकता है।

विलियम एच. गेरेन ने इस शब्द की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी: "कोढ़ एक फूट कर निकले अभिशाप, या एक रोग, और त्वचा पर सफ़ेद पपड़ी के लिए एक अनिश्चितकालीन और सामान्य शब्द है। इसे या तो सूजन या फूट निकलने या एक उजले दाग के द्वारा पहचाना जाता है"[6] इसी कारण, लैव्यव्यवस्था 13 और 14 में "कोढ़," विभिन्न प्रकार के त्वचा रोगों में से किसी का भी सन्दर्भ हो सकता है।[7] जब इसे वस्त्रों या भवनों पर लागू किया जाता है, तो यह स्पष्ट तौर एक ऐसी स्थिति का सन्दर्भ देता है जो इन त्वचा रोगों में से किसी एक के सदृश होता था।

पुराने नियम में "कोढ़" शब्द के उपयोग की तुलना आज जिस प्रकार "कैंसर"

शब्द का उपयोग किया जाता है उससे की जा सकती है। "कैंसर" शब्द में रोगों की व्यापक किस्में आती है जिन सब में कुछ न कुछ एक समान होता है, परन्तु कुछ अन्य की तुलना में अधिक गम्भीर होती हैं। उसी प्रकार, "कोढ़" में त्वचा के रोगों की बहुत सी किस्में सम्मिलित थीं जिनके लक्षण एक समान थे, हालाँकि कुछ मात्र असुविधाजनक थीं जबकि अन्य विकृत करने वाली और यहाँ तक की प्राण घातक भी थीं।

हालाँकि "कोढ़" शब्द आवश्यक तौर पर किसी ऐसे प्रकार के कोढ़ का सन्दर्भ नहीं देता जिससे अधिकांश लोग परिचित हैं, यह सम्भव है कि क्लिनिकल (नैदानिक) कोढ़ लैव्यव्यवस्था 13 में वर्णित किए गए रोगों में सम्मिलित है। आर. के. हैरिसन ने हेन्सन डिज़ीज़ के लक्षणों की तुलना अध्याय 13 में वर्णित लक्षणों से की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे,

> तुलना ... चिकित्सकों और बाइबल टिप्पणीकारों स्वीकार किए गए रूपों की अपेक्षा लैव्यव्यवस्था 13 के घातक *सारा'अत* और क्लिनिकल कोढ़ के कुछ रूपों के बीच अधिक सामंजस्य का संकेत करती है। परन्तु यह सत्य है कि कोढ़ की कुछ विशेषताओं का वर्णन पवित्रशास्त्र में नहीं किया गया है... .।[8]

इसी कारण, लैव्यव्यवस्था 13 में बताए गए "कोढ़" को केवल हेन्सन डिज़ीज़ तक सीमित नहीं करना चाहिए, हालाँकि यह स्थिति सम्भवतः उस शब्द में सम्मिलित है।[9]

आगे आने वाली व्याख्या में, "कोढ़" शब्द को उसी प्रकार प्रयुक्त किया गया है जिस प्रकार NASB में लैव्यव्यवस्था 13 और 14 में इसका उपयोग किया गया है। इन अध्यायों का मूल संदेश शब्द में निर्दिष्ट सटीक रोग या समस्या के बावजूद एक समान है।

कोढ़ी लोग (13:1-46)

सामान्य निर्देश (13:1-8)

[1]फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, [2]"जब किसी मनुष्य के शरीर के चर्म में सूजन या पपड़ी या दाग हो, और इससे इसके चर्म में कोढ़ की व्याधि सा कुछ दिखाई पड़े, तो उसे हारून याजक के पास या उसके पुत्र जो याजक हैं उनमें से किसी के पास ले जाएँ। [3]जब याजक उसके चर्म की व्याधि को देखे, और यदि उस व्याधि के स्थान के रोएँ उजले हो गए हों और व्याधि चर्म से गहरी दिखाई पड़े, तो वह जान ले कि कोढ़ की व्याधि है; और याजक उस मनुष्य को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए। [4]पर यदि वह दाग उसके चर्म में उजला तो हो, परन्तु चर्म से गहरा न देख पड़े, और न वहाँ के रोएँ उजले हो गए हों, तो याजक उसको सात दिन तक बन्द कर रखे; [5]और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि जैसी की तैसी बनी रहे और उसके चर्म में न फैली हो, तो याजक उसको और भी

सात दिन तक बन्द कर रखे; 6और सातवें दिन याजक उसको फिर देखे, और यदि देख पड़े कि व्याधि की चमक कम है और व्याधि चर्म पर फैली न हो, तो याजक उसको शुद्ध ठहराए; क्योंकि उसके तो चर्म में पपड़ी है; और वह अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाए। 7पर यदि याजक की उस जाँच के पश्चात जिसमें वह शुद्ध ठहराया गया था, वह पपड़ी उसके चर्म पर बहुत फैल जाए, तो वह फिर याजक को दिखाया जाए; 8और यदि याजक को देख पड़े कि पपड़ी चर्म में फैल गई है, तो वह उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ ही है।"

यहोवा ने इस विषय पर एक सामान्य कथन के साथ आरम्भ किया कि यदि किसी इस्राएली को "कोढ़" होने का संदेह हो तो क्या किया जाना चाहिए। बाद में, उसने कुछ मामलों में क्या किया जाना चाहिए इसके बारे में विवरण दिया।

आयत 1. यह संदेश जैसे ही आरम्भ होता है, यह कहा है कि यह नियम, इससे पहले दिए गए नियमों के समान ही, **यहोवा** की ओर से आया था। इस बार, परमेश्वर ने **मूसा और हारून** दोनों से बात की। पिछले अध्यायों के समान, उसने यह नहीं कहा, कि उन्हें इन वचनों को इस्राएल के लोगों के साथ साझा करना था। फलतः लोग इन नियमों को अनुभव के द्वारा सीखेंगे।

आयत 2. कोढ़ की पहचान करने में मुख्य व्यक्ति याजक होता था, या तो महायाजक (**हारून**) अथवा अन्य **याजकों** (हारून के **पुत्र**) में से एक। याजक होने के अलावा, उन्होंने इस्राएल के वैद्यों के रूप में भी कार्य किया। यह तथ्य कि इस अध्याय में उनका कार्य मन यह निर्धारित करना था कि लोगों को कोढ़ था या नहीं लैव्यव्यवस्था में 10:10 उन्हें सौंपे गए कार्य से मेल खाता है: "जिससे तुम पवित्र और अपवित्र में, और शुद्ध और अशुद्ध में अन्तर कर सको।"

यद्यपि इस वाक्यांश में याजक की तुलना एक आधुनिक चिकित्सक से की जा सकती है, फिर भी कुछ अन्तर हैं: (1) याजक एक व्यक्ति का उसके कोढ़ से इलाज करने के लिए बनाया गया कोई उपचार नहीं बता सकता था; वह केवल रोग की पहचान करता सकता था और इसके बाद रोगी व्यक्ति का संगरोधन कर सकता था।[10] (2) रोग की पहचान करने के लिए याजक के पास केवल एकमात्र तरीका उसकी दृष्टि थी। यह जानने के लिए कि किसी को कोढ़ था या नहीं, वह केवल व्यक्ति के शरीर के प्रभावित क्षेत्रों को देखकर और जो उसने देखा था वह उसकी तुलना उन लक्षणों से कर सकता था जो परमेश्वर के द्वारा बताए गए थे।

आयत 2 इस भाग के विषय की घोषणा करती है: यह उस व्यक्ति से सम्बन्धित है जिसके **शरीर पर**[11] और उसकी **त्वचा** पर कुछ असामान्य था - चाहे वह एक **सूजन, एक पपड़ी या एक दाग हो -** जो कोढ़ बन गया था या **कोढ़ के संक्रमण**[12] के समान दिखाई देता था। जब ऐसे लक्षण घटित होते, तो यह समय डॉक्टर के पास जाने का होता था, जिसका अर्थ है, महायाजक या अन्य किसी याजक के पास इसकी जाँच करवाने के लिए जाना। यह महत्वपूर्ण हो सकता है कि शब्द कहता है कि जिस व्यक्ति को कोढ़ होने का संदेह होता था उसे याजक के पास **लाया** जाता था; शब्द यह नहीं कहता कि उसे याजक के सामने "स्वयं को प्रस्तुत" करना पड़ता

था। सम्भवतः तात्पर्य यह है उसे याजक के सामने उपस्थित होने की आवश्यकता थी चाहे वह इसे चाहता था या नहीं। याजक रोग की पहचान करता और यह निर्धारित करता कि कोढ़ वास्तव में उपस्थित था। स्पष्ट तौर पर, एक व्यक्ति जिसे किसी भी प्रकार की त्वचा की समस्या होती थी उसे प्रारम्भिक तौर पर "कोढ़ से संक्रमित" समझा जाता था। सम्भावित कोढ़ी से उसके शुद्ध घोषित किए जाने तक ऐसा व्यवहार किया जाता था मानो वह अशुद्ध हो।

परमेश्वर ने याजकों को निर्देश दिए ताकि वे ये जान पाएं कि उन्हें क्या देखना था और जो उन्होंने देखा था उसके विषय में क्या करना था। उसने अधिकांश जानकारी सम्मिलित की, और उदाहरण भी दिए।

आयत 3. पहली सम्भावना यह थी कि रोगी **त्वचा** के **बाल सफ़ेद** हो चुके थे रोग **त्वचा** की गहराई से अधिक, त्वचा के नीचे के मांस को प्रभावित करता हुआ प्रतीत होता था। यदि रोगी क्षेत्र में ये लक्षण होते थे, रोग की पहचान यह थी कि व्यक्ति को **कोढ़** था और वह **अशुद्ध** था।

आयतें 4-6. एक दूसरी सम्भावना यह भी थी कि रोगी **दाग** स्वयं **सफ़ेद** था परन्तु **उसके ऊपर के बाल सफ़ेद नहीं हुए थे** और समस्या केवल त्वचा में गहरी प्रतीत होती थी। यदि ऐसा मामला था, तो व्यक्ति को तुरन्त शुद्ध घोषित नहीं किया जा सकता था; बल्कि, उसे **सात दिनों तक** अलग[13] बन्द रखा जाता था (13:4)। समय समाप्त होने पर, **याजक** (एक चिकित्सक के समान कार्य करते हुए) को फिर से उसे देखना पड़ता था। यदि, याजक उसको **देखे** कि चर्म रोग अधिक न हुआ हो और **न फैली हो**, तो पीड़ित व्यक्ति को और भी सात दिन के लिये बन्द कर रखा जाता (13:5) था। इस समय के समाप्त होने पर, उसकी एक बार और जाँच करनी पड़ती थी यह देखने के लिए कि त्वचा कि समस्या ठीक होती प्रतीत हो रही थी। **यदि संक्रमण घट गया था** और **फैला नहीं था**, **याजक** को उसे **शुद्ध घोषित करना पड़ता** था। इसके बाद वह **अपने वस्त्र धोकर शुद्ध हो जाता** (13:6)।

आयतें 7, 8. रोगी के शुद्ध घोषित किए जाने के बाद और उसके शुद्ध होने के लिए आवश्यक कार्य करने के बाद, **त्वचा** की समस्या फिर से आ सकती थी। यदि ऐसा होता, तो उसे फिर से **याजक के सामने जाने की आवश्यकता पड़ती**। यदि रोगी क्षेत्र **(पपड़ी) फैल गई थी,** तो **याजक** को उसे **अशुद्ध** घोषित करना पड़ता था। उसकी स्थिति को **कोढ़** का नाम दिया गया।

मामला 1: त्वचा में सूजन (13:9-17)

[9]"यदि कोढ़ की सी व्याधि किसी मनुष्य के हो, तो वह याजक के पास पहुँचाया जाए; [10]और याजक उसको देखे, और यदि वह सूजन उसके चर्म में उजली हो, और उसके कारण रोएँ भी उजले हो गए हों, और उस सूजन में बिना चर्म का मांस हो, [11]तो याजक जाने कि उसके चर्म में पुराना कोढ़ है, इसलिये वह उसको अशुद्ध ठहराए; और बन्द न रखे, क्योंकि वह अशुद्ध है। [12]और यदि कोढ़ किसी के चर्म से फूटकर यहाँ तक फैल जाए, कि जहाँ कहीं याजक देखे रोगी के सिर से पैर के तलवे

तक कोढ़ ने सारे चर्म को छा लिया हो, 13तो याजक ध्यान से देखे, और यदि कोढ़ ने उसके सारे शरीर को छा लिया हो, तो वह उस व्यक्ति को शुद्ध ठहराए; और उसका शरीर जो बिलकुल उजला हो गया है वह शुद्ध ही ठहरे। 14पर जब उसमें चर्महीन मांस देख पड़े, तब वह अशुद्ध ठहरे। 15और याजक चर्महीन मांस को देखकर उसको अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वैसा चर्महीन मांस अशुद्ध ही होता है; वह कोढ़ है। 16पर यदि वह चर्महीन मांस फिर उजला हो जाए, तो वह मनुष्य याजक के पास जाए, 17और याजक उसको देखे, और यदि वह व्याधि फिर से उजली हो गई हो, तो याजक रोगी को शुद्ध जाने; वह शुद्ध है।"

अध्याय के आरम्भ में दिए गए सामान्य निर्देशों के बाद छह मामलों के संबंध में अन्य विधियों का पालन किया जाता है जो वर्णन में थोड़ा भिन्न हैं। ये बताते हैं कि विशिष्ट स्थितियों में सामान्य नियम कैसे लागू किए जाने थे।

आयत 9. अनुच्छेद **कोढ़ के संक्रमण** से संबंधित प्राथमिक नियम को दोहरा कर आरम्भ होता है। जिस किसी को असामान्य त्वचा की स्थिति थी उसे **याजक के पास लाया जाना था** (देखें 13:2)।

आयतें 10, 11. इस वाक्यांश में बताई गई विशेष समस्या **त्वचा में एक सफ़ेद सूजन है**। याजक को दो और लक्षण देखने पड़ते थे: सूजन के ऊपर के **बाल** भी **सफ़ेद** हुए थे या नहीं और **सूजन** में **बिना चर्म का मांस** था या नहीं। यदि ये दो लक्षण उपस्थित थे, तो सूजन यह संकेत करती थी कि व्यक्ति को **पुराना**[14] **कोढ़** था, और उसे **अशुद्ध** घोषित कर दिया जाता था। उसे सात दिनों तक अलग नहीं किया जाता था क्योंकि रोग के विषय में कोई संदेह नहीं था।

आयतें 12, 13. ऐसा प्रतीत होता है कि आगे एक दूसरी सम्भावना पर विचार किया गया है। यदि विचाराधीन व्यक्ति (सम्भवतः एक "सफ़ेद सूजन" वाला मनुष्य) में पाए गए **कोढ़** के संदेह वाला धब्बा उसके शरीर को ढकने तक फैलता रहा, **उसके सिर से लेकर पैर तक**, कि उसकी सारी त्वचा **सफ़ेद हो गई**, तो उसे **शुद्ध** घोषित करना पड़ता था। प्रभावित व्यक्ति को निश्चित तौर पर एक त्वचा का रोग था, परन्तु इसे ऐसा नहीं समझा जाना था कि यह संक्रमित व्यक्ति "अशुद्ध" कहे जाने के लिए पर्याप्त गंभीर थी। क्लाइड एम. वुड्स और जस्टिन एम. रॉजर्स ने कहा इस मामले में रोग "विटिलिगो या सोरायसिस" रहा होगा।[15] इस प्रकार की समस्याएं "कोढ़" का रोग निर्णय करने को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त गम्भीर नहीं थीं।

आयतें 14-17. इसके बाद अन्य सम्भावनाओं पर विचार किया गया है। यदि पहले शुद्ध घोषित किए गए व्यक्ति त्वचा पर **चर्महीन मांस** दिखाई पड़ता, तो निर्णय को पलट दिया जाता था। वह फिर से **अशुद्ध हो** जाता (13:14, 15)। हालाँकि, यदि **चर्महीन मांस** चंगा होकर **सफ़ेद** हो जाता, तो एक बार और निर्णय पलटा जा सकता था; और इसके बाद उसे एक बार फिर से **शुद्ध** घोषित किया जाता (13:16, 17)।

मामला 2: त्वचा पर फोड़ा (13:18-23)

18"फिर यदि किसी के चर्म में फोड़ा होकर चंगा हो गया हो, 19और फोड़े के स्थान में उजली सी सूजन या लाली लिये हुए उजला दाग हो, तो वह याजक को दिखाया जाए; 20और याजक उस सूजन को देखे, और यदि वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, और उसके रोएँ भी उजले हो गए हों, तो याजक यह जानकर उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है जो फोड़े में से फूटकर निकली है। 21परन्तु यदि याजक देखे कि उसमें उजले रोएँ नहीं हैं, और वह चर्म से गहरी नहीं, और उसकी चमक कम हुई है, तो याजक उस मनुष्य को सात दिन तक बन्द कर रखे; 22और यदि वह व्याधि उस समय तक चर्म में सचमुच फैल जाए, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह कोढ़ की व्याधि है। 23परन्तु यदि वह दाग न फैले और अपने स्थान ही पर बना रहे, तो वह फोड़े का दाग है; याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए।"

अध्याय में जिस दूसरे मामले पर बात की गई है उसका सम्बन्ध एक फोड़े के परिणाम स्वरूप उजली सी सूजन से है।

आयतें 18-20. इन आयतों में वर्णित **त्वचा का फोड़ा** पहले **चंगा** हो चुका था (13:18)। हालाँकि, इसके **स्थान** पर एक उ**जली सी सूजन या लाली लिये हुए, उजला दाग हो**। तो "सूजन" या "दाग" को **याजक को दिखाना** पड़ता था (13:19)। पिछले मामलों के समान, वह उसकी विशिष्टताओं के आधार पर यह निर्णय लेता कि वह कोढ़ था कि नहीं। यदि दाग की जड़ें थीं और वे **त्वचा** की सतह के नीचे गई हुई थीं, और दाग के भीतर के **बाल सफ़ेद** हो गए थे, तो याजक को **कोढ़ के संक्रमण के** रोग का निर्णय करना पड़ता था और पीड़ित व्यक्ति को **अशुद्ध** घोषित करना पड़ता था (13:20)।

आयत 21. प्रक्रिया अलग थी यदि त्वचा की उजली सूजन में बढ़ रहे **बाल सफ़ेद** नहीं थे तो प्रक्रिया अलग थी, उजली सूजन **त्वचा** की सतह पर थी, और रंग **फीका** पड़ चुका था (जिसका अर्थ है कि, दाग का रंग उतना उज्ज्वल नहीं था जितना वह वास्तव में था)। तो याजक को व्यक्ति को जाँच के लिए **सात दिनों तक अलग बंद रखना पड़ता था**।

आयतें 22, 23. सात दिनों के अन्त पर, याजक को व्यक्ति फिर से जाँच करनी पड़ती थी। यदि रोगी दाग फैल गया था उस व्यक्ति को **अशुद्ध** घोषित करना पड़ता था। उसके रोग के संक्रमण कहा जाता था - कुछ ऐसा जिसे "कोढ़" कहा जा सकता था। हालाँकि, यदि त्वचा का **दाग** सात दिन में फैला नहीं था, तो व्यक्ति को **शुद्ध** घोषित करना पड़ता था; दाग, एक संक्रमण के रूप में पहचाने जाने के बजाए, **फोड़े** के परिणामस्वरूप एक **निशान** का नाम दिया गया।

मामला 3: त्वचा में जलने का घाव (13:24-28)

24"फिर यदि किसी के चर्म में जलने का घाव हो, और उस जलने के घाव में

चर्महीन दाग लाली लिये हुए उजला या उजला ही हो जाए, 25तो याजक उसको देखे, और यदि उस दाग में के रोएँ उजले हो गए हों और वह चर्म से गहरा दिखाई पड़े, तो वह कोढ़ है; जो उस जलने के दाग में से फूट निकला है; याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसमें कोढ़ की व्याधि है। 26पर यदि याजक देखे कि दाग में उजले रोएँ नहीं और न वह चर्म से कुछ गहरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो वह उसको सात दिन तक बन्द कर रखे, 27और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैल गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि है। 28परन्तु यदि वह दाग चर्म में नहीं फैला और अपने स्थान ही पर जहाँ का तहाँ बना हो, और उसकी चमक कम हुई हो, तो वह जल जाने के कारण सूजा हुआ है, याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; क्योंकि वह दाग जल जाने के कारण से है।"

यहोवा द्वारा वर्णित तीसरा विशिष्ट उदाहरण जलने के घाव के परिणामस्वरूप त्वचा की समस्या है।

आयतें 24-28. एक **जलने के** परिणामस्वरूप त्वचा पर **घाव से** निपटने के लिए निर्देश पहले निर्देशों के समान ही हैं। (1) त्वचा की समस्या के लिए एक ज्ञात कारण था। पिछले मामले में, कारण एक फोड़ा था; इस घटना में, यह एक "जलने का घाव" था। (2) इस कारण ने त्वचा के एक भाग को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया था। समस्या के इस क्षेत्र को **उजला दाग, लाली लिए हुए, या सफ़ेद** के रूप में प्रस्तुत किया (13:24)। (3) इस दाग को **याजक** को दिखाना पड़ता था, जो उसे देखने के द्वारा यह तय करता था कि उसमें दो लक्षण थे कि नहीं। इस मामले में लक्षण उन्हीं के समान थे जिनकी सूची पिछले मामलों में दी गई थी: और यदि उस दाग में के **रोएँ उजले हो** गए हों और वह **चर्म से गहरा** दिखाई पड़े (13:25)।

जाँच के परिणाम भी एक समान ही थे। (1) यदि त्वचा में दो प्रकार के लक्षण दिखाई पड़ते, तो रोग को **कोढ़** घोषित कर दिया जाता था, और इससे प्रभावित व्यक्ति को **अशुद्ध** घोषित कर दिया जाता था। (2) यदि **दाग में उजले रोएँ नहीं और** संक्रमण **न ही चर्म से कुछ गहरा है, और उसकी चमक कम हुई है, तो** उस व्यक्ति को **सात दिन तक बन्द** कर रखे (13:26)। (3) और सातवें दिन याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैल गई हो, तो वह उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; **क्योंकि उसको कोढ़ की व्याधि है** (13:27)। परन्तु यदि वह **दाग** चर्म में नहीं फैला, और उसकी **चमक कम** हुई थी, तो उस मनुष्य को **शुद्ध** ठहरा दिया जाता था (13:28)।

मामला 4: सिर या दाढ़ी का संक्रमण (13:29-37)

29"फिर यदि किसी पुरुष या स्त्री के सिर पर, या पुरुष की दाढ़ी में व्याधि हो, 30तो याजक व्याधि को देखे, और यदि वह चर्म से गहरी देख पड़े, और उसमें भूरे भूरे पतले बाल हों, तो याजक उस मनुष्य को अशुद्ध ठहराए; वह व्याधि सेंहुआ, अर्थात् सिर या दाढ़ी का कोढ़ है। 31और यदि याजक सेंहुएँ की व्याधि को देखे कि

वह चर्म से गहरी नहीं है और उसमें काले काले बाल नहीं हैं, तो वह सेंहुएँ के रोगी को सात दिन तक बन्द कर रखे, 32और सातवें दिन याजक व्याधि को देखे, तब यदि वह सेंहुआ फैला न हो, और उसमें भूरे भूरे बाल न हों, और सेंहुआ चर्म से गहरा न देख पड़े, 33तो यह मनुष्य मूँड़ा तो जाए; परन्तु जहाँ सेंहुआ हो वहाँ न मूँड़ा जाए; और याजक उस सेंहुएँवाले को और भी सात दिन तक बन्द करे; 34और सातवें दिन याजक सेंहुएँ को देखे, और यदि वह सेंहुआ चर्म में फैला न हो और चर्म से गहरा न देख पड़े, तो याजक उस मनुष्य को शुद्ध ठहराए; और वह अपने वस्त्र धोके शुद्ध ठहरे। 35पर यदि उसके शुद्ध ठहरने के पश्चात सेंहुआ चर्म में कुछ भी फैले, 36तो याजक उसको देखे, और यदि वह चर्म में फैला हो, तो याजक भूरे बाल न ढूँढ़े; क्योंकि वह मनुष्य अशुद्ध है। 37परन्तु यदि उसकी दृष्टि में वह सेंहुआ जैसे का तैसा बना हो, और उसमें कालेकाले- बाल जमे हों, तो वह जाने कि सेंहुआ चंगा हो गया है, और वह मनुष्य शुद्ध है; याजक उसको शुद्ध ही ठहराए।"

"कोढ़" का अगला मामला जिसका वर्णन किया गया है वह ऐसा है जो सिर की त्वचा पर होता था और व्यक्ति के सिर या एक मनुष्य की दाढ़ी (थोड़ी) को प्रभावित करता था।

आयत 29. इस सन्दर्भ में रोग **एक पुरुष या स्त्री** दोनों में से किसी को भी प्रभावित कर सकता था (जैसा कि अगले विशिष्ट मामले में है)।[16] यहाँ पर चर्चा किए गए संक्रमण की पहचान इसके कारक (फोड़े या जलने के घाव) के द्वारा नहीं की जा सकती, बल्कि इसके स्थान के द्वारा की जा सकती है। यह संक्रमण **सिर पर** पाया जाता था, जो एक पुरुष या एक स्त्री के बालों को या एक पुरुष की **दाढ़ी** को प्रभावित करता था। (13:40 में आरम्भ होने वाले भाग में प्रस्तुत अन्तिम मामला, एक सिर को प्रभावित करने वाले रोग से भी संबंधित है।)

आयत 30. दूसरे मामलों के समान ही, **याजक** को प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण करना पड़ता था। निम्नलिखित मापदंड निर्धारित करते हैं कि कोढ़ सम्मिलित था या नहीं: (1) घाव ने किस प्रकार **त्वचा** के नीचे के मांस को प्रभावित किया था और (2) बालों (रोएं) का रंग। यदि घाव त्वचा की गहराई से अधिक था और **बाल पतला** और भूरा था, तो रोग की पहचान सेंहुए **(कोढ़)** के रूप में की जाती थी। इन लक्षणों से प्रभावित पुरुष या स्त्री को **अशुद्ध** घोषित कर दिया जाता था। वे **सिर या दाढ़ी के कोढ़** से संक्रमित थे।

आयतें 31-34. हालाँकि, यदि, समस्या त्वचा से गहरी दिखाई नहीं पड़ती थी, और इसमें **कोई काला बाल तो नहीं था**, तो अलग बंद रखने और पुनः जाँच करने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती थी। संगरोधन के **सात दिनों के बाद** (13:31), व्यक्ति की फिर से जाँच की जाती थी। यदि **सेंहुआ फैला नहीं था, और उसमें कोई भूरा बाल नहीं उगा था**, और वह **चर्म** से गहरा दिखाई नहीं पड़ता था (13:32), तो व्यक्ति को **अपना मुण्डन** (रोग के क्षेत्र को छोड़कर) करना पड़ता था और **सात और दिनों तक** बंद रखा जाता था (13:33)। समय के समाप्त होने पर, यदि व्यक्ति की स्थिति बुरी नहीं हुई थी, तो **याजक** को **उसे शुद्ध घोषित** करना पड़ता था;

इसके बाद उसे अपने **वस्त्र धोने पड़ते थे** और **शुद्ध होना** पड़ता था (13:34)।

आयतें 35-37. इस सेंहुए (पपड़ी) के रोग के लिए दो अंतिम सम्भावनाओं पर टिप्पणी की गई है: (1) यदि व्यक्ति के शुद्ध होने के बाद उसकी स्थिति बिगड़ जाए, तो **याजक** को उसे **अशुद्ध** घोषित करना पड़ता था (13:35, 36)। (2) यदि **सेंहुआ** जैसा का तैसा बना रहे और उसमें केवल **काले बाल** उग आएँ, तो व्यक्ति **चंगा** हो गया था और **याजक** को **उसे शुद्ध घोषित** करना पड़ता था (13:37)।

मामला 5: उजले दाग (13:38, 39)

38"फिर यदि किसी पुरुष या स्त्री के चर्म में उजले दाग हों, 39तो याजक देखे, और यदि उसके चर्म में वे दाग कम उजले हों, तो वह जाने कि उसको चर्म में निकली हुई दाद ही है; वह मनुष्य शुद्ध ठहरे।"

यहाँ पर चर्चा किए गए पिछले दो विशिष्ट मामलों ऐसी स्थितियों से निपटते हैं जिनके विषय में यह सोचा जा सकता है कि वे कोढ़ का संकेत थीं पर ऐसा नहीं था। पहले का प्रमाण "त्वचा पर उजले दाग" था।

आयतें 38, 39. कोढ़ के रोग का निर्णय करने से अतिरिक्त, याजकों को यह निर्धारित करने में भी सक्षम होने की आवश्यकता पड़ती थी कि कब कोढ़ उपस्थित नहीं था।, उदाहरण के लिए, यदि किसी के शरीर की **त्वचा पर उजले दाग थे**, तो कोई यह सोच सकता था, वह कोढ़ था; परन्तु यदि दाग केवल **फीके सफ़ेद** थे, तो समस्या **खुजली** थी। पुरानी त्वचा की खुजली संक्रामक नहीं थी और वह कोढ़ नहीं थी। इसकी शिकायत वाले व्यक्ति को **शुद्ध** घोषित करना पड़ता था।

मामला 6: एक गंजे सिर पर (13:40-44)

40"फिर जिसके सिर के बाल झड़ गए हों, तो जानना कि वह चन्दुला तो है परन्तु शुद्ध है। 41और जिसके सिर के आगे के बाल झड़ गए हों, तो वह माथे का चन्दुला तो है परन्तु शुद्ध है। 42परन्तु यदि चन्दुले सिर पर या चन्दुले माथे पर लाली लिये हुए उजली व्याधि हो, तो जानना कि वह उसके चन्दुले सिर या चन्दुले माथे पर निकला हुआ कोढ़ है। 43इसलिये याजक उसको देखे, और यदि व्याधि की सूजन उसके चन्दुले सिर या चन्दुले माथे पर ऐसी लाली लिये हुए उजली हो जैसा चर्म के कोढ़ में होता है, 44तो वह मनुष्य कोढ़ी है और अशुद्ध है; और याजक उसको अवश्य अशुद्ध ठहराए; क्योंकि वह व्याधि उसके सिर पर है।"

अध्याय में जिस अंतिम विशिष्ट मामले से निपटा गया है वह गंजेपन और एक गंजे सिर पर एक संक्रमण का है।

आयतें 40, 41. उस **मनुष्य** के विषय में क्या जो **गंजा** था? यह परिणाम निकालना बहुत सरल रहा होगा कि उसका गंजापन कोढ़ का एक चिन्ह था, क्योंकि गंजापन एक पुरुष के सिर के लिए सामान्य स्थिति नहीं है - कम से कम युवा वर्षों

में। हालाँकि, याजक (साधारण इस्राएलियों समेत) इस बात से आश्वस्त थे कि गंजापन अपने आप में एक कोढ़ की स्थिति नहीं था। गंजा व्यक्ति **शुद्ध** था।[17]

आयत 42. फिर भी, एक पुरुष का **गंजा सिर** या **गंजा माथा** कोढ़ी हो सकता था। यदि उसके गंजे माथे पर **लाली लिए हुए एक उजली व्याधि** होती थी, तो यहोवा ने घोषणा की और कहा कि वह कोढ़ था।

आयतें 43, 44. इस क्षण पर, यह याजक का उत्तरदायित्व था कि वह गंजे सिर वाले मनुष्य की जाँच करे। यदि रोगी दाग में **कोढ़ दिखाई पड़ता** था जो शरीर के किसी अन्य भाग में पाया जा सकता था, और यदि **वह लाली लिए हुए उजला** दाग था, तो याजक को **कोढ़** वाले मनुष्य का रोग निर्णय करना पड़ता था और उसे **अशुद्ध** घोषित करना पड़ता था।

कोढ़ के परिणाम (13:45, 46)

[45]"जिसमें वह व्याधि हो उस कोढ़ी के वस्त्र फटे और सिर के बाल बिखरे रहें, और वह अपने ऊपरवाले होंठ को ढाँपे हुए अशुद्ध, अशुद्ध पुकारा करे। [46]जितने दिन तक वह व्याधि उसमें रहे उतने दिन तक वह अशुद्ध रहेगा; और वह अशुद्ध ठहरा रहे; इसलिये वह अकेला रहा करे, उसका निवास स्थान छावनी के बाहर हो।"

कोढ़ होने के संदेह वाले लोगों के विषय में दिए गए निर्देश इस सूचना के साथ समाप्त होते हैं "जिस कोढ़ी को संक्रमण" था उसके साथ क्या घटित होने वाला था।

आयतें 45, 46. कोढ़ के सम्बन्ध में नियमों ने अब तक यह बताया है कि, कई प्रकार के मामलों में, लोगों को "कोढ़ी" के रूप में वर्गीकृत किया जाता था और "अशुद्ध" घोषित कर दिया जाता था; परन्तु अब तक शब्द ने यह प्रकट नहीं किया है कोढ़ वाले व्यक्ति के साथ क्या किया जाना था। यह भाग जिसे कोढ़ था उसके लिए कई आवश्यक बातों की व्याख्या करते हुए समाप्त होता है। उस व्यक्ति को **अपने वस्त्र** फाड़ने थे, और अपने **सिर के बालों** को उघाड़ना था,[18] **और वह अपने ऊपरवाले होंठ को ढाँपे हुए** और **अशुद्ध, अशुद्ध पुकारना पड़ता था!** उसे **छावनी के बाहर** एक स्थान में **अकेला** रहना पड़ता था (देखें गिनती 5:1-4)। ये परिणाम तब तक बने रहते थे जब तक उसे संक्रमण रहता था।

ये गम्भीर परिणाम थे! परमेश्वर ने यह संकेत किया कि कोढ़ एक भयानक रोग था। किसी का वस्त्र फाड़ना, किसी का बालों को बिखेरना, और किसी का चेहरे को ढकना शोक के सभी संकेत थे; तो व्यक्ति कि गतिविधि यह संकेत करती थी कि वह एक प्रकार से जीते हुए ही मृत्यु का अनुभव कर रहा था। इस तथ्य ने कि उसे छावनी के बाहर रहना पड़ता था उसकी "अशुद्धता" पर बल देता है। छावनी "पवित्र" थी; इसके भीतर एक निवासस्थान था, जिसमें एक भाव से, परम-पवित्र परमेश्वर निवास करता था। एक **कोढ़ी जिसे संक्रमण था**, वह अशुद्ध होकर, परमेश्वर के पवित्र लोगों को अशुद्ध करेगा। इसी कारण, एक कोढ़ी का जीवन ऐसा

जो मृत्यु और अशुद्धता दोनों का संकेत करता था।[19]

निस्संदेह, अच्छा समाचार यह था कि जो कोढ़ी उसके कोढ़ी बने रहने तक इन परिणामों को भोगता था। जब कोढ़ के लक्षण अदृश्य हो जाते तो शुद्धिकरण और पुनःस्थापन उपलब्ध था, जैसा कि अगला अध्याय बल देता है।

कोढ़ वाले वस्त्र (13:47-59)

[47]"फिर जिस वस्त्र में कोढ़ की व्याधि हो, चाहे वह वस्त्र ऊन का हो चाहे सनी का, [48]वह व्याधि चाहे उस सनी या ऊन के वस्त्र के ताने में हो चाहे बाने में, या वह व्याधि चमड़े में या चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में हो, [49]यदि वह व्याधि किसी वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की किसी वस्तु में हरी हो या लाल सी हो, तो जानना कि वह कोढ़ की व्याधि है और वह याजक को दिखाई जाए। [50]और याजक व्याधि को देखे, और व्याधिवाली वस्तु को सात दिन के लिये बन्द करे; [51]और सातवें दिन वह उस व्याधि को देखे, और यदि वह वस्त्र के चाहे ताने में चाहे बाने में, या चमड़े में या चमड़े की बनी हुई किसी वस्तु में फैल गई हो, तो जानना कि व्याधि गलित कोढ़ है, इसलिये वह वस्तु, चाहे कैसे ही काम में क्यों न आती हो, तौभी अशुद्ध ठहरेगी। [52]वह उस वस्त्र को जिसके ताने या बाने में वह व्याधि हो, चाहे वह ऊन का हो चाहे सनी का, या चमड़े की वस्तु हो, उसको जला दे, वह व्याधि गलित कोढ़ की है; वह वस्तु आग में जलाई जाए। [53]यदि याजक देखे कि वह व्याधि उस वस्त्र के ताने या बाने में, या चमड़े की उस वस्तु में नहीं फैली, [54]तो जिस वस्तु में व्याधि हो उसके धोने की आज्ञा दे, तब उसे और भी सात दिन तक बन्द कर रखे; [55]और उसके धोने के बाद याजक उसको देखे, और यदि व्याधि का न तो रंग बदला हो, और न व्याधि फैली हो, तो जानना कि वह अशुद्ध है; उसे आग में जलाना, क्योंकि चाहे वह व्याधि भीतर चाहे ऊपरी हो तौभी वह खा जाने वाली व्याधि है। [56]पर यदि याजक देखे कि उसके धोने के पश्चात व्याधि की चमक कम हो गई, तो वह उसको वस्त्र के चाहे ताने चाहे बाने में से, या चमड़े में से फाड़के निकाले; [57]और यदि वह व्याधि तब भी उस वस्त्र के ताने या बाने में, या चमड़े की उस वस्तु में दिखाई पड़े, तो जानना कि वह फूट के निकली हुई व्याधि है; और जिसमें वह व्याधि हो उसे आग में जलाना। [58]यदि उस वस्त्र से जिसके ताने या बाने में व्याधि हो, या चमड़े की जो वस्तु हो उस से जब धोई जाए और व्याधि जाती रही, तो वह दूसरी बार धुल कर शुद्ध ठहरे।" [59]ऊन या सनी के वस्त्र में के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो उसके शुद्ध और अशुद्ध ठहराने की यही व्यवस्था है।

इस अध्याय का ध्यान लोगों से हटकर उन वस्त्रों पर जाता है जो वे पहनते थे। जो यह है कि, यह अगला भाग वस्त्रों में पाए जाने वाले "कोढ़" से सम्बन्धित है।

आयतें 47, 48. इस नियम के विषय का परिचय इन आयतों में दिया गया है: एक वस्त्र, चाहे वह वस्त्र **ऊन** का हो चाहे **सनी** का चाहे चमड़े का बना था, जो

कोढ़ से संक्रमित था। यह संक्रमण क्या था? स्पष्ट तौर पर एक वस्त्र शाब्दिक तौर पर किसी भी त्वचा के संक्रमण से संक्रमित नहीं हो सकता था जिसका वर्णन अब तक इस अध्याय में किया गया है। शरीर के "कोढ़" और वस्त्र के "कोढ़" यह समानता रही होगी के वे कुछ-कुछ एक समान दिखते होंगे। वास्तव में, एक मनुष्य में "कोढ़" में और एक वस्त्र में "कोढ़" में कई समानताएं हैं। डब्ल्यू. एच. बेलिन्गर, जूनियर, ने लिखा, "वस्त्रों में भी वही लक्षण उभरते हैं जो मनुष्यों में उभरते हैं, और जाँच की एक समान प्रतिक्रिया और रोकथाम का सुझाव दिया गया है। परिणाम या तो सफ़ाई करना या नष्ट करना है।"[20] आम तौर पर, यह माना जाता है कि वस्त्र का कोढ़ फफूंदी, सड़न, या काई होगा।[21] शायद इस "कोढ़" के रूप का संकेत आयत 55 के द्वारा किया गया है, जो "खा जाने वाली व्याधि" के विषय में बात करता है जिसने जाँच के अधीन वस्त्र के ऊपर या सामने "नंगापन उत्पन्न" कर दिया था।

वाक्यांश का परिवर्तन **ताने या बाने में** इस अध्याय के इस भाग में नौ बार ऊन या सनी के बने वस्त्रों के सम्बन्ध में उपयोग किया गया है। इब्रानी बाइबल में ये शब्द केवल यहीं पर पाए जाते हैं। "ताना" "करघे में लम्बाई में खींचे गए धागों का एक समूह है, जिसके माध्यम से बाने वाली बुनाई की नली को बुना जाता है।"[22] "ताने या बाने" का उपयोग यहाँ वस्त्र के "किसी भी भाग" के लिए किया जाता है।[23]

आयत 49. वस्त्र के स्वामी को पहले यह निर्धारित करना पड़ता था कि "कोढ़" के संदेह वाला **निशान हरा** था या **लाल**। यदि वह इन दोनों में से किसी भी रंग का होता था, तो उसे कोढ़ युक्त समझ लिया जाता था और उसे **याजक को दिखाना पड़ता था**।

आयतें 50-52. याजक के यह पुष्टि करने के बाद कि वस्त्र में कोढ़ का **निशान** था, उसे उस वस्त्र को **सात दिनों के लिए संगरोधित** करना पड़ता था (13:50)। यदि उस समय के समाप्त होने तक **निशान फैल** गया था, तो **वस्त्र को आग में जलाना पड़ता** था (13:51, 52)।

पाठक को यह स्मरण करना चाहिए कि उन दिनों में अधिकांश लोगों पर सम्भवतः बहुत अधिक मात्रा में वस्त्र नहीं होते थे। पुराना नियम यह संकेत करते हुए प्रतीत होता है कि उस समय के मज़दूरों पर कई वस्त्र नहीं होते थे (देखें निर्गमन 22:26, 27)। इसी कारण, यदि एक वस्त्र को नष्ट को करना पड़ता था, तो यह उसके स्वामी के लिए एक बड़ी हानि रही होगी।

आयतें 53-55. अलग रखने की सात दिन की अवधि के समाप्त होने पर, यदि **निशान वस्त्र में नहीं फैला था**, तो **याजक** को वस्त्र को धुलवाना पड़ता था। और इसके बाद उसे **सात और दिनों** तक संगरोधित करके अलग रखना पड़ता था (13:53, 54)। इसके बाद, उसकी दोबारा जाँच करनी पड़ती थी। यदि निशान बना हुआ था चाहे संक्रमण न फैला हो, उस वस्त्र को **अशुद्ध** घोषित करके जलाना पड़ता था (13:55)।

आयतें 56-58. यदि, धोने और संगरोधित करने की दूसरी अवधि के बाद, कोढ़ का निशान फीका पड़ गया था, तो याजक को संक्रमित स्थान को वस्त्र में से

फाड़कर बाहर निकालना पड़ता था (13:56)। यदि वह फिर से दिखाई पड़ता तो **फूट निकलने वाले कोढ़** की घोषणा करनी पड़ती थी, और इसके बाद **वस्त्र** को **आग में जलाना** पड़ता था (13:57)। हालाँकि, यदि धोने और सात दिन और संगरोधित करने के बाद **निशान चला गया** था, तो उसे **दूसरी बार धोना** पड़ता था (सात दिन दूसरी अलग रखने की अवधि के बाद)। इसके बाद उसे शुद्ध घोषित कर दिया जाता था (13:58)।

आयत 59. लेवीय नियमों का यह भाग सम्बन्धित विषय के पुनः कथन के द्वारा सारांशित किया गया है: **ऊन या सनी के वस्त्र में के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी वस्तु में जो कोढ़ की व्याधि हो।** यहाँ पर दिए गए दिशा निर्देशों विस्तृत दिशानिर्देश जाँच के अधीन वस्त्रों को **शुद्ध और अशुद्ध ठहराने** में सक्षम बनाते थे।

अध्याय 13 में कोढ़ से संबंधित इन नियमों के लिए कारण

इस अध्याय में नियमों का व्यावहारिक प्रभाव किसी भी इस्राएली को यदि अशुद्ध बनाना था यदि उसे निर्धारित त्वचा रोगों में से एक हो गया था। जब एक व्यक्ति फिर से शुद्ध हो जाता, तो उसे एक बलिदान चढ़ाना पड़ता था जैसा कि अध्याय 14 प्रकट करता है।

सम्भवतः आधुनिक पाठकों के लिए हो मुख्य प्रश्न उत्पन्न होता है वह है "क्यों?" क्यों इस अध्याय में वर्णित कोई भी रोग को किसी भी व्यक्ति को एक कोढ़ी और अशुद्ध व्यक्ति के रूप में वर्गीकृत करना चाहिए, उस स्थिति में सम्मिलित सभी परिणामों सहित? परमेश्वर ने ऐसे नियम क्यों दिए?

भूतकाल में, बहुत से लोग यह विश्वास करते थे कि इन नियमों की मंशा परमेश्वर के लोगों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की थी। संभावित संक्रामक बीमारियों की पहचान करके और फिर रोगी लोगों को संगरोधित करने के द्वारा, यहोवा ने ऐसे नियम दिए जिन्होंने उन रोगों के प्रसार को रोका जो इस्राएल को दुर्बल कर सकते थे।

हालाँकि, हाल ही में कुछ ने इस दृष्टिकोण पर प्रश्न उठाया है। उदाहरण के लिए, रॉय गेन ने तर्क दिया,

> वास्तव में रोग के निर्धारण करने और संगरोधन करने के लिए इन अध्यायों का प्रसंग एक या अधिक मेडिकल स्थितियों के साथ नहीं है, परन्तु उन बाहरी लक्षणों को पहचानने के साथ है जो व्यक्तियों या वस्तुओं को विधिपूर्वक अशुद्ध श्रेणी में रखती हैं, जिन्हें पवित्र क्षेत्र से अलग रखा जाना चाहिए।

इसके साथ उन्होंने जोड़ा कि इस अध्याय का प्रसंग औषधि नहीं है, बल्कि धार्मिक विधियाँ हैं।[24]

लैव्यव्यवस्था के अधिकांश नियमों के समान ही, ये नियम, मुख्य तौर पर धार्मिक विधियों से जुड़े हुए थे। पाठक यह समझ सकता है कि परमेश्वर ने अपने पवित्र लोगों और पवित्र स्थान को अपवित्रता से मुक्त रखने की अपनी चिंता के

कारण कुछ आज्ञाएँ दी हैं, बिना इस प्रश्न का उत्तर दिए "क्यों?" उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति यह सोच सकता है कि क्यों कुछ त्वचा के रोग विधिपूर्वक अशुद्ध थे और अन्य नहीं थे (उदाहरण के लिए, देखें 13:13)। क्यों कुछ चर्मरोग व्यक्ति को अशुद्ध करते हैं, जबकि बहरा या गूंगा (19:14) या लंगड़ा[25] होने के समान अपंग होना किसी को अशुद्ध नहीं करते थे?

इसका एक उत्तर यह हो सकता है कि जो रोग विधि के अनुसार अशुद्ध नहीं थे वे उन रोगों के समान बुरे नहीं दिखाई पड़ते थे जो अशुद्ध थे। एक उत्तम उत्तर यह होगा कि सम्भवतः उन रोगों को जिन्हें "अशुद्ध" या "कोढ़" घोषित किया गया था, वे उन की तुलना में जो कोढ़ नहीं थे अधिक घातक या अधिक संक्रामक थे। यदि यही उत्तर है, तो एक व्यक्ति को इस निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए कि परमेश्वर केवल धार्मिक विधियों के लिए चिंतित नहीं था, बल्कि वह उसके लोगों के स्वास्थ्य के विषय में भी चिंता करता था। उसका मुख्य उद्देश्य निश्चित तौर पर विधिपूर्ण शुद्धता थी। हालाँकि इन नियमों का प्रभाव एक स्वस्थ पवित्र राष्ट्र रहा होगा, जो बहुत से संक्रामक रोगों से सुरक्षित था।

अनुप्रयोग

क्या पाप "संक्रामक" है? (अध्याय 13)

एक व्यक्ति जिसे लैव्यव्यवस्था 13 में वर्णित कोढ़ में से कोई भी होता था वह अशुद्ध था पापमय नहीं।[26] फिर भी, कोढ़ पाप के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रदान करता है। जिस प्रकार कोढ़ जिस भी वस्तु को स्पर्श करता था उसे दूषित कर देता था और अन्त में इससे प्रभावित लोगों को मार देता था, उसी प्रकार पाप भी इसके अभ्यास करने वालों को दूषित करता देता है और अन्त में नष्ट कर देता है।

पाप की तुलना कोढ़ से करना एक प्रश्न खड़ा करता है। कोढ़ स्पष्ट तौर पर संक्रामक था; अन्यथा, वह व्यक्ति जिसे यह रोग होता था उसे अलग करने का थोड़ा ही महत्व रहा होता। हम यह पूछ सकते हैं, "क्या पाप संक्रामक है?" क्या एक व्यक्ति को किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रहने जो एक पापी है, "पाप" लग सकता है, या वह पाप से संक्रमित हो सकता है? इस प्रश्न के लिए उत्तर एक स्पष्ट "न" और एक योग्य "हाँ" दोनों है।

पहला उत्तर। इस प्रश्न का पहला उत्तर "न" है, एक भाव से कि एक व्यक्ति के पाप का दोष दूसरे व्यक्ति को नहीं दिया सकता। यहेजकेल 18 यह सिखाता है कि न तो अभ्यास और न ही पाप का दोष पिता से पुत्र को पहुंच सकता है। इसी कारण, आदम के पाप का दोष, शेष मानव जाति तक नहीं पहुंचा था। यह तथ्य कि मिस्र में यूसुफ़ और बेबीलोन में दानिय्येल के समान पुरुष पापियों में रहकर और अपनी धार्मिकता बनाए रख सके यह प्रमाणित करता है वातावरण किसी व्यक्ति को अपने आप से पापी नहीं बना सकता। लोग इसलिए पापी बनते हैं क्योंकि वे पाप करते हैं, इस कारण नहीं कि वे पापियों के साथ रहते हैं।

यीशु के दिनों में यहूदी लोग इस तथ्य को समझने में विफल हो गए। उन्होंने

यीशु के पापियों के साथ रहने की आलोचना की, मानो वे कह रहे थे कि इस प्रकार के लोगों से उसके सम्बन्ध ने उसे भी अपवित्र कर दिया था और उसे भी एक पापी बना दिया था। हम इसे भिन्न रूप से जानते हैं, निस्सन्देह; वह पापियों के साथ रहा और यहाँ तक कि उनका मित्र भी बन गया ताकि वह उन्हें बचा सके।

यह आज भी सत्य है। मसीहियों को इस बात से चिन्तित नहीं होना चाहिए कि उन्हें किसी अन्य व्यक्ति के साथ रहने उसका पाप उन्हें "लग" जाएगा। वास्तव में, यदि मसीही पापियों के साथ कुछ समय व्यतीत नहीं करते, तो उनके पास उन्हें मसीह के पास लेकर आने का कोई अवसर नहीं होगा।

दूसरा उत्तर। एक अन्य भाव से, पाप को संक्रामक समझा जा सकता है। यह निस्संदेह फैलता है। व्यक्ति, समूह, और समाज बुरे से बदतर की ओर जाते प्रतीत होते हैं। पाप बढ़ता है; कुछ लोगों के पाप अन्य लोगों को पाप करने की प्रेरणा देते हैं। मसीहियों को इस प्रवृत्ति से लड़ना चाहिए - पहले पाप न करने के द्वारा, और इसके बाद पाप के विरुद्ध प्रचार करने के द्वारा और अन्य लोगों से पाप न करने के लिए विनती करने के द्वारा।

यद्यपि, एक अधिक गंभीर समस्या यह है, पाप तब संक्रामक हो सकता है यदि हम हमारे करीबी मित्रों और साथियों को पाप करने के लिए प्रभावित करने की अनुमति दें। पौलुस ने इस विचार को इस प्रकार व्यक्त किया: "बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है" (1 कुरि. 15:33)। हमें पापियों को मसीह तक लाने के लिए अपना उत्तम प्रयास करना चाहिए, परन्तु हमें स्वयं को उन परिस्थितियों में डालने से बचना चाहिए जो हमारे मित्रों को हमें पाप की ओर ले जाने की अनुमति देती हैं।

उपसंहार। क्या पाप, कोढ़ के समान संक्रामक है? नहीं, कोई भी विरासत में मिले पाप के दोष या पापियों को स्पर्श करने के द्वारा पापी नहीं बनता। हालाँकि, उत्तर "हाँ" बन सकता है यदि हम अपने मित्रों को स्वयं को पाप करने के लिए प्रभावित करने की अनुमति देते हैं।

अच्छा समाचार यह है कि मसीह पापियों का उद्धार करने आया। यदि हम उद्धार के लिए उसकी और मुड़ें तो वह हमारे पापों को दूर कर सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]आर. के, हैरिसन, "लेपर, लेप्रसी," इन *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया,* रिवाइज्ड एडिशन, एड. ज्याँफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:103-4. [2]गॉर्डन जे. वेन्हम, *द बुक ऑफ़ लैव्यव्यवस्था,* द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1979), 194-95. [3]हैरिसन, 3:103-4. [4]यह इब्रानी बाइबल (पुराना नियम) का यूनानी अनुवाद है, जिसे मिस्र में तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व पूरा किया गया था। [5]उदाहरण के लिए, लैव्यव्यवस्था 13:3 में, NASB में "एन इन्फेक्शन ऑफ़ लेप्रसीअस" (कोढ़ का एक संक्रमण) है। अन्य संस्करणों में "ए प्लेग ऑफ़ लेप्रसी (कोढ़ की एक महामारी)" (KJV), "ए लेप्रस सोर (एक कोढ़ का घाव)" (NKJV), और "ए लेप्रस डिज़ीज़ (एक कोढ़ का रोग)" (NRSV) है। कुछ संस्करण "कोढ़" का

उपयोग नहीं करते, बल्कि उनमें "ए स्किन डिज़ीज़ [व्हिच] इज़ कन्टेजियस (त्वचा का जो रोग संक्रामक है)" (NJB), "ए डिफाइलिंग डिज़ीज़ (एक अशुद्ध करने वाला रोग)" (NIV), और "ए सीरियस स्किन डिज़ीज़ (एक गम्भीर त्वचा रोग)" (NLT) है। [6]विलियम एच. गेरेन, "लेप्रसी," इन *मर्सर डिक्शनरी ऑफ़ द बाइबल*, एड. वाटसन ई. मिल्स (मैकन, जी. ए.: मर्सर यूनिवर्सिटी प्रेस, 1990), 508. [7]हर चर्म रोग को कोढ़ के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जाता था। लैव्यव्यवस्था 13:13 में वर्णित व्यक्ति को स्पष्ट रूप से किसी प्रकार की त्वचा का रोग था, परन्तु उसका उपचार एक कोढ़ी एक समान नहीं किया गया था। एक रोग को "कोढ़" *(त्सारा'अथ)* कहलाने के लिए, स्पष्ट तौर इसे विशेषतः विषाक्त या घातक और/अथवा संक्रामक होना था। [8]हैरिसन, 3:105. क्लिनिकल कोढ़ की कुछ "अवर्णित" विशेषताओं की व्याख्या इस तथ्य के द्वारा की जा सकती है कि लैव्यव्यवस्था 13 का उद्देश्य कोढ़ पर एक चिकित्सकीय पुस्तक का एक भाग बनकर कार्य करना नहीं था, बल्कि एक याजक के लिए एक व्यक्ति में कोढ़ की पहचान करना सम्भव बनाना था। इस उद्देश्य के लिए, कोढ़ के सभी लक्षणों की सूची बनाया जाना आवश्यक नहीं था। वेन्हम ने यह दावा करते हुए, एक भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किया कि, "आधुनिक मेडिकल मत इस बात पर सहमत है कि ... कोढ़ [हेन्सन डिज़ीज़] लैव्यव्यवस्था 13 में वर्णन किए जा रहे रोगों में से एक नहीं है।" इसके बाद उन्होंने इस कथन के लिए तीन कारण दिए। (वेन्हम, 195-96.) कुछ लोग यह संदेह भी करते हैं कि बाइबल में कोढ़ के विषय में अन्य सन्दर्भ, वे चाहे पुराने नियम या नए नियम में हो, वे "क्लिनिकल कोढ़" का सन्दर्भ देते हैं। [9]रॉय गेन भी इसी के समान एक निष्कर्ष पर पहुँचे: "ऐसा प्रकट होता है की बिब्लिकल *सारा'अत* में कम से कम प्राचीन वीभत्स रोग का एक रूप जिसे हम आज (कोढ़) का नाम देते हैं सम्मिलित था" (रॉय गेन, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, द NIV एप्लीकेशन कमेन्ट्री [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन, 2004], 235)। [10]डॉन डेवेल्ट, *लैव्यव्यवस्था,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज़ (जोप्लिन, एम. ओ.: कॉलेज प्रेस, 1975), 198.

[11]इब्रानी शब्द בָּשָׂר *(ब'सर)*, जिसका अनुवाद आयत 2 में "शरीर" में हुआ है और जो उसके आगे आते हैं, उनका शाब्दिक अर्थ "माँस" है। [12]इब्रानी शब्द נֶגַע *(नेगा)*, जिसका अनुवाद "इन्फ़ेक्शन (संक्रमण)" में हुआ है, उसका अनुवाद "मार्क (निशान)" के रूप में भी हुआ है। दोनों अंग्रेज़ी शब्द 13 और 14 अध्याय में प्रायः पाए जाते हैं। *नेगा* का शाब्दिक अर्थ "चोट" या "घाव" है। [13]आयत 4 में शब्द סָגַר *(सगर)*, और अध्याय में अन्य कहीं भी उसका शाब्दिक अर्थ "बन्द करना" है। विचार यह है कि व्यक्ति को शेष समाज से "बंद करना" या "पृथक करना" पड़ता था। [14]"क्रोनिक" (יָשָׁן, *याशान)* शाब्दिक तौर पर "पुराना" है; यह "फिर से फूट निकलने" के विचार का संकेत कर सकता है। [15]क्लाइड एम. वुड्स एंड जस्टिन एम. रॉजर्स, *लैव्यव्यवस्था - गिनती*, द कॉलेज प्रेस NIV कमेंट्री (जोप्लिन, एम. ओ.: कॉलेज प्रेस पब्लिशिंग को, 2006), 92. विटिलिगो "त्वचा में रंग की एक साधारण क्षति" है और हल्की त्वचा वाले लोगों की तुलना में अक्सर गहरी त्वचा वाले लोगों को प्रभावित करता है। (आर के. हैरिसन, *लेवीटिकस*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज़ डाउनर्स ग्रोव], इलिनोई.: इंटर-वर्सीटी प्रेस, 1980], 142.) [16]दोनों सामान्य निर्देश जिनके साथ अध्याय आरम्भ होता है (13:2) और चर्चा के पहले विशिष्ट मामले (13:9) एक रोग जो कोढ़ हो सकता है उससे पीड़ित "एक मनुष्य" की बात करते हैं; आगे वर्णित दो विशिष्ट मामलों में "शरीर" की बात की गई जो कि पीड़ित था (13:18, 24); अगले दो विचाराधीन मामलों में यह कहकर आरम्भ किया गया कि यह रोग "एक पुरुष या महिला" को प्रभावित कर सकता था (13:29, 38); और अंतिम मामला "एक मनुष्य" से संबंधित है जिसने अपने बालों को खो दिया था (13:40)। [17]इस मामले में, जिस व्यक्ति को भी यह समस्या होती थी उसे याजक के सामने लेकर नहीं आया जाता था। उसे शुद्ध घोषित नहीं करना पड़ता था; वह शुद्ध ही था। [18]उसके बालों को "उघाड़ने (खुला छोड़ना)" का अर्थ उसके बालों को "अस्त-व्यस्त" करना भी हो सकता है (NEB; REB)। [19]वेन्हम, 200-1. इस बात के प्रमाण हैं कि कोढ़ियों को वास्तव में अन्य इस्राएलियों की उपस्थिति से बाहर कर दिया जाता था, जैसा कि मरियम (गिनती 12:15), सामरिया के चार कोढ़ियों (2 राजा. 7:3), और उज्जियाह (2 राजा. 15:5; 2 इतिहास 26:16-21) के मामले में देखा गया है। [20]डब्ल्यू. एच. बेलिन्गर, जूनियर,

लैव्यव्यवस्था, गिनती, न्यू इंटरनेशनल बाइबिलिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मेसाच्युशेट्स.: हैंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2001), 84.

[21]वुड्स एंड रॉजर्स, 94. [22]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एन्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एन्ड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टमैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1977), 1059-60. "वार्प (ताना)" या "वूफ (बाना)" के बजाए, NIV "वूवन (बुना हुआ)" या "निटेड (बुना गया)" में अनुवाद करती है। आर। लेयर्ड हैरिस ने कहा कि NIV में "निटेड" शब्द सम्भवतः एक "कालभ्रम" है चूंकि बुनाई का मध्य युग तक आविष्कार नहीं किया गया था। (आर. लेयर्ड हैरिस, "लैव्यव्यवस्था," इन *द एक्सपोजिटर्स बाइबिल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति - गिनती*, एड. फ्रैंक ई. गेबीलिन [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जोंडरवैन पब्लिशिंग हाउस, 1990], 580.) [23]हैरिसन ने इन शब्दों को "एक बुने हुए वस्त्र की समग्रता को दर्शाते हुई एक व्यापक अभिव्यक्ति" के रूप में देखा (हैरिसन, लैव्यव्यवस्था, 146)। [24]गेन, 235. [25]पुराने नियम में इसका एक उदाहरण मपीबोशेत है (2 शमूएल 4:4)। [26]देखें 13:3, 7, 10, 15, 18-20, 24, 29.